



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 07 (जुलाई, 2025)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

कृषि में प्रसार शिक्षा की भूमिका: एक विस्तृत अध्ययन

*संदीप कुमार¹ एवं रोहताश कुमार²

¹स्नातकोत्तर छात्र, प्रसार शिक्षा, सरदारकृषिनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, दांतीवाड़ा, गुजरात, भारत

²विद्यावाचस्पति छात्र, प्रसार शिक्षा, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: sandeepbhaducoa@gmail.com

कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और देश की एक बड़ी आबादी की आजीविका का मुख्य स्रोत है। समय के साथ, कृषि क्षेत्र में कई तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति हुई हैं, लेकिन इन नवाचारों का लाभ सभी किसानों तक समान रूप से नहीं पहुंच पाता है। यहीं पर प्रसार शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका सामने आती है। प्रसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य किसानों और ग्रामीण समुदायों को नवीनतम कृषि तकनीकों, वैज्ञानिक ज्ञान और कौशल से अवगत कराना है, ताकि वे अपनी कृषि पद्धतियों को बेहतर बना सकें, उत्पादन बढ़ा सकें और अंततः अपने जीवन स्तर में सुधार ला सकें। प्रसार शिक्षा केवल सूचना का विस्तार नहीं है, बल्कि यह एक सहभागी और सीखने की प्रक्रिया है। यह किसानों को उनकी विशिष्ट परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में मदद करती है। प्रसार कार्यकर्ता किसानों के साथ मिलकर काम करते हैं, उनकी समस्याओं को समझते हैं और उन्हें व्यावहारिक समाधान खोजने में सहायता करते हैं।

कृषि में प्रसार शिक्षा के मुख्य उद्देश्य

प्रसार शिक्षा कृषि क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करती है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:

- **नवीनतम तकनीकों और सूचनाओं का प्रसार:** प्रसार शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य कृषि अनुसंधान और विकास संस्थानों द्वारा विकसित नई तकनीकों, उन्नत बीजों, उर्वरकों, कीटनाशकों और सिंचाई विधियों के बारे में किसानों को जानकारी देना है। यह सुनिश्चित करता है कि वैज्ञानिक प्रगति का लाभ खेतों तक पहुंचे।
- **किसानों के कौशल और क्षमता का विकास:** प्रसार शिक्षा किसानों को आधुनिक कृषि उपकरणों के उपयोग, फसल प्रबंधन, पशुधन देखभाल और अन्य संबंधित क्षेत्रों में आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करती है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रदर्शनों और क्षेत्र भ्रमणों के माध्यम से किसानों की क्षमता का निर्माण किया जाता है।
- **समस्या-समाधान और निर्णय लेने में सहायता:** प्रसार कार्यकर्ता किसानों को उनकी खेती से जुड़ी विभिन्न समस्याओं, जैसे कि मिट्टी की उर्वरता, कीटों का प्रकोप, बीमारियों और बाजार की चुनौतियों का सामना करने में मदद करते हैं। वे किसानों को सही जानकारी और विश्लेषण प्रदान करके बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं।
- **सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना:** प्रसार शिक्षा पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करती है। इसमें जैविक खेती, एकीकृत कीट प्रबंधन, जल संरक्षण और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन जैसी तकनीकों को बढ़ावा देना शामिल है, ताकि दीर्घकालिक कृषि उत्पादन सुनिश्चित किया जा सके।
- **किसानों, अनुसंधान संस्थानों और बाजारों के बीच संबंध स्थापित करना:** प्रसार शिक्षा किसानों को कृषि विश्वविद्यालयों, अनुसंधान केंद्रों और बाजार की ताकतों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह किसानों को नवीनतम शोध निष्कर्षों तक पहुंच प्रदान करती है और उन्हें अपनी उपज को प्रभावी ढंग से बेचने के लिए बाजार की जानकारी उपलब्ध कराती है।
- **सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता बढ़ाना:** सरकार द्वारा किसानों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी प्रसार शिक्षा के माध्यम से किसानों तक पहुंचाई जाती है। यह किसानों को इन योजनाओं का लाभ उठाने और अपने विकास को गति देने में मदद करता है।

- **नेतृत्व विकास और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** प्रसार शिक्षा ग्रामीण समुदायों में नेतृत्व क्षमता विकसित करने और किसानों को सामूहिक रूप से अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रेरित करती है। यह किसान समूहों, सहकारी समितियों और अन्य सामुदायिक संगठनों के गठन और संचालन में सहायता करती है।

प्रसार शिक्षा के प्रमुख तरीके

प्रसार शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों और तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इन्हें मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

- **व्यक्तिगत संपर्क विधियाँ:** इन विधियों में प्रसार कार्यकर्ता सीधे किसानों से व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं और उन्हें जानकारी प्रदान करते हैं। इनमें खेत पर दौरा, व्यक्तिगत सलाह, प्रदर्शन और किसान मेलों में व्यक्तिगत बातचीत शामिल है। ये विधियाँ किसानों की विशिष्ट समस्याओं को समझने और उन्हें व्यक्तिगत समाधान प्रदान करने में अत्यधिक प्रभावी होती हैं।
- **समूह संपर्क विधियाँ:** इन विधियों में प्रसार कार्यकर्ता किसानों के समूहों के साथ बातचीत करते हैं और उन्हें जानकारी प्रदान करते हैं। इनमें बैठकें, कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम, चर्चा समूह, फील्ड डे और किसान स्कूल शामिल हैं। ये विधियाँ एक साथ कई किसानों तक पहुंचने और ज्ञान और अनुभवों को साझा करने के लिए उपयोगी होती हैं।
- **जनसंचार विधियाँ:** इन विधियों में रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, पोस्टर और आजकल इंटरनेट और मोबाइल ऐप जैसे आधुनिक माध्यमों का उपयोग करके बड़ी संख्या में किसानों तक जानकारी पहुंचाई जाती है। ये विधियाँ जागरूकता बढ़ाने और सामान्य जानकारी प्रसारित करने में प्रभावी होती हैं।

किसानों पर प्रसार शिक्षा का प्रभाव

प्रसार शिक्षा का किसानों और कृषि क्षेत्र पर गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके कुछ महत्वपूर्ण प्रभाव निम्नलिखित हैं:

- **उत्पादकता और आय में वृद्धि:** प्रसार शिक्षा के माध्यम से किसानों द्वारा आधुनिक तकनीकों और उन्नत कृषि पद्धतियों को अपनाने से फसल की पैदावार और पशुधन उत्पादन में वृद्धि होती है, जिससे किसानों की आय बढ़ती है।
- **संसाधन प्रबंधन में सुधार:** प्रसार शिक्षा किसानों को मिट्टी, पानी और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के बारे में जानकारी प्रदान करती है, जिससे संसाधनों का संरक्षण होता है और कृषि अधिक टिकाऊ बनती है।
- **आधुनिक तकनीकों का ज्ञान और अंगीकरण:** प्रसार शिक्षा किसानों को नवीनतम कृषि अनुसंधान और तकनीकों से अवगत कराती है, जिससे वे इन तकनीकों को अपनाने और अपनी खेती को अधिक कुशल और लाभदायक बनाने के लिए प्रेरित होते हैं।
- **कृषि चुनौतियों के प्रति अधिक लचीलापन:** बेहतर ज्ञान और कौशल के साथ, किसान सूखा, बाढ़, कीटों का प्रकोप और बाजार की अस्थिरता जैसी कृषि चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना करने में सक्षम होते हैं।
- **सशक्तिकरण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार:** प्रसार शिक्षा किसानों को ज्ञान और आत्मविश्वास प्रदान करती है, जिससे वे बेहतर निर्णय ले पाते हैं और अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होते हैं। इससे उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

भारत में प्रसार शिक्षा की चुनौतियाँ और भविष्य

भारत में प्रसार शिक्षा ने कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है:

- **छोटे और सीमांत किसानों तक पहुंच:** देश में बड़ी संख्या में छोटे और सीमांत किसान हैं, जिन तक प्रभावी ढंग से प्रसार सेवाओं को पहुंचाना एक बड़ी चुनौती है।
- **प्रसार सेवाओं में आधुनिक तकनीकों का एकीकरण:** सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) और डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग करके प्रसार सेवाओं को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाने की आवश्यकता है।
- **प्रसार कर्मियों की क्षमता निर्माण:** प्रसार कार्यकर्ताओं को नवीनतम कृषि तकनीकों और संचार कौशल में लगातार प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
- **किसान-प्रसार-अनुसंधान संपर्क को मजबूत करना:** किसानों, प्रसार कार्यकर्ताओं और अनुसंधान संस्थानों के बीच प्रभावी समन्वय और सहयोग सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।
- **कृषि क्षेत्र की बदलती जरूरतों को संबोधित करना:** जलवायु परिवर्तन, बाजार की मांग और उपभोक्ता प्राथमिकताओं में बदलाव के अनुसार प्रसार सेवाओं को अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

प्रसार शिक्षा को मजबूत करने के लिए सुझाव

भारत में कृषि विकास को गति देने के लिए प्रसार शिक्षा प्रणाली को मजबूत करना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- **अधिक प्रसार कार्यकर्ताओं की भर्ती और प्रशिक्षण:** पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षित और प्रेरित प्रसार कार्यकर्ताओं की भर्ती की जानी चाहिए और उन्हें नियमित रूप से नवीनतम तकनीकों और संचार कौशल का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- **संसाधनों का आवंटन बढ़ाना:** प्रसार सेवाओं के लिए पर्याप्त वित्तीय और बुनियादी ढांचे के संसाधनों का आवंटन किया जाना चाहिए।
- **डिजिटल तकनीकों का उपयोग:** किसानों तक पहुंचने और जानकारी साझा करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म और मोबाइल तकनीकों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए।
- **महिला किसानों पर विशेष ध्यान:** महिला किसानों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रसार कार्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए।
- **अनुसंधान और प्रसार के बीच मजबूत संबंध:** अनुसंधान संस्थानों और प्रसार एजेंसियों के बीच घनिष्ठ समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए ताकि नवीनतम अनुसंधान निष्कर्षों को तेजी से किसानों तक पहुंचाया जा सके।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** कृषि प्रसार में निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए नीतियां बनाई जानी चाहिए।
- **किसानों की भागीदारी को बढ़ावा देना:** प्रसार कार्यक्रमों की योजना और कार्यान्वयन में किसानों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- **प्रदर्शन और सीखने के माध्यम से प्रसार:** किसानों को नई तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रदर्शन खेतों और सीखने के केंद्रों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

भविष्य में, प्रसार शिक्षा को अधिक किसान-केंद्रित, मांग-आधारित और प्रौद्योगिकी-संचालित होने की आवश्यकता है। इसमें आईसीटी, मोबाइल एप्लिकेशन, ड्रोन और अन्य आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके किसानों तक समय पर और प्रासंगिक जानकारी पहुंचाई जा सकती है। इसके अलावा, निजी क्षेत्र, गैर-सरकारी संगठनों और किसान संगठनों को भी प्रसार सेवाओं के वितरण में अधिक सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

निष्कर्ष

संक्षेप में, कृषि में प्रसार शिक्षा एक अपरिहार्य उपकरण है जो किसानों को ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास प्रदान करके कृषि विकास को गति देता है। यह न केवल किसानों की उत्पादकता और आय में वृद्धि करता है, बल्कि उन्हें टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाने और कृषि चुनौतियों का सामना करने में भी सक्षम बनाता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, प्रसार शिक्षा को मजबूत और प्रभावी बनाना कृषि क्षेत्र के सतत विकास और किसानों के कल्याण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार, अनुसंधान संस्थानों, प्रसार एजेंसियों और किसानों को मिलकर काम करना होगा ताकि प्रसार शिक्षा की पूरी क्षमता का उपयोग किया जा सके और भारतीय कृषि को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सके।